उपक्रमणिका

§ 1. भाषाक मानचित्रमे मैथिली

भारत नाना प्रकारक भाषासभक मानू एक सुरम्य उद्यान थिक। एतय भारोपीय, द्रविळ, ऑस्ट्रो-एसिआटिक तथा चीन-तिब्बतीय कुलक लगभग 175 भाषा आ' 544 उपभाषा पाओल जाइत आछ। उक्त चारू कुल मध्य मैथिली भारोपीय कुलमे पड़ैत अछि।

एहि भारोपीय कुलक अवधारणा 1786 ई. में सर विलियम जोन्स (1745-1794) कें भेलनि। ओ ग्रीक, लैटिन, फारसी आ' संस्कृत जनैत छलाह। एहि चारू भाषामे विस्मयकारी साम्य देखि हुनका प्रतीत भेलनि जे ई सभ भाषा कोनो एके भाषासँ बहरायल होयत जे भाषा आब लुप्त भ' गेल अछि। हुनक एहि अवधारणाकेँ पकड़ि कतोक पाश्चात्य विद्वान्‌लोकनि भारतसँ यूरोप धरि पसरल बहुतो भाषासभक ऐतिहासिक तथा तुलनात्मक अध्ययन क' एहि निष्कर्ष पर पहुँचलाह जे ई सभी भाषा एके मूलक थिक आओर एहि भाषा-समूहक नाम रखलनि भारत-यूरोपीय (संक्षेपमे भारोपीय वा भारो) कुल। आओर, ई भाषासभ जाहि लुप्त किन्तु अनुमानगम्य भाषासँ बहरायल तकर नाम राखल गेल मूल भारत-यूरोपीय भाषा (संक्षेपमे मूभा.)।

भारोपीय कुल मोटा-मोटी बारह शाखामे बाँटल गेल अछि : भारतीय (वा आर्य भारतीय), ईरानी, बाल्टिन, स्लाभिक, आर्मेनिअन, ग्रीक, लैटिन, केल्टिअक, जर्मनिक, तोखारी आ' हिन्ती। एहि शाखासभक दू वर्ग अछि - सतेम आ' केन्तुम। पहिल वर्गक भाषा सभमे शत शब्दक पर्यायमे स्/श् पबैत छी आ' दोसर वर्गक भाषा सभमे क्' जेना ईरानी सतेम, लैटिन केन्तुम। एहि विभाजनमे मैथिली सतेम वर्गक अन्तर्गत आर्यभारतीय शाखामे पड़ैत अछि।

(क) प्राचीन भारतीय आर्यभाषा (संक्षेपमे प्राभा)

एकर दू स्वरूप अछि : वैदिक (आर्य) आ' लौकिक (संस्कृत)। ई दूनू क्रमशः पूर्व प्राभा (पू प्राभा) तथा उत्तर प्राभा (उ प्राभा) कहबैत अछि।

(ख) मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा (संक्षेपमे मभा)

प्राभामे लगभग 400 ई.पू. में परिवर्तनक एक प्रबल तरंग आयल। ताहि जे एकर स्वरूप उद्‌भूत भेल से कहओलक प्राकृत अर्थात् जनसाधारणक सह स्वाभाविक मौखिक व्यवहारक भाषा।

पछाति एहिमे क्षेत्रानुसार विविध परिवर्तन अबैत गेल आ' तदनुसार एक महाराष्ट्री, शौरसेनी, मागधी इत्यादि भेदभस उद्‌भूत भेल। एहि सभी मध्य मैथिलीक मूल मागधीमे पाओल जाइत अछि। पुनः 600 ई. अबैत-अबैत उक्त प्राकृत सभमे परिवर्त्तन तेज भेल। एतय धरि प्राकृत भाषा स्वनतन्त्रमे प्राभासँ बहुत भिन्न होइतहुँ व्याकरण आ' वाक्य-संरचनाक दृष्टिएँ प्राभाक छाया जकाँ छल आओर प्राभा तकरे जकाँ लगभग देशव्यापी छल। एहि परिवर्तनक फलस्वरूप प्राभासँ ओकर निकटता नष्ट भ' गेलैक आ' संगहि व्यापकता सेहो नहि रहलैक। एहि अवस्थामे आबि एकर जे स्वरूप भेल तकर नाम पड़ल अपभ्रंश, नागर अपभ्रंश वा मध्यदेशीय अपभ्रंश इत्यादि। एहिमे मैथिलीक मूल मागध अपभ्रंश थिक। पुनः ई अपभ्रंश भाषासभी 800 ई. क आस-पासमे आबि नब स्वरूप पओलक जे अबहट्ठ (अपभ्रष्ट) कहओलक। एकरा अपभ्रंशक अपभ्रंश वा द्वितीय अपभ्रंश कहि सकैत छी। एकर विशेषता अछि किछु एहन नब-नब तत्त्व सभक समावेश जे एकरा अग्रिम अवस्थाक भाषासँ जोड़ैत अछि। मैथिलीक आदिम रूप जाहि अबहट्ठमे भेटैत अछि तकर उत्कृष्ट उदाहरण थिक विद्यापतिक कीर्तिलता आदि।

(ग) नवीन भारतीय आर्यभाषा (नभा)

ईशाक द्वितीय सहस्राब्दी भारतीय आर्यभाषाक इतिहासमे एक नव युग ल' आयल। एकर सभसँ महत्त्वपूर्ण अवदान छल आजुक विविध क्षेत्रीय भाषा सभक उद्‌भव-एहन भाषासभक जकर संरचनात्मक स्वरूप प्राभा आ' मभासँ सहसा बहुत दूर भ' गेल आ' जकर पारस्परिक बोधगम्यता सहसा बहुत घटि गेल। ई भाषासभ नवीन भारतीय आर्यभाषा (नभा) कहल जाइत अछि। सभक नाम अपन-अपन क्षेत्रक अनुसार पड़लैक, जेना मराठी, गुजराती, बंगला आदि। एही भाषासभमे अन्यान्य भाषाकुलक बहुत-रास उपादान, जे प्राभा आ' मभामे स्थान नहि पाबि सकल छल, सादर प्रवेश पओलक आ' एहि भाषासभकेँ विविध स्थानीय रंग देलक। फलतः ई भाषासभ स्थानीय संस्कृतिक संवाहिका भ' साहित्यकेँ समृद्ध कयलक। आलोच्य मैथिली एही नभाक एक अलङ थिक।

§ 2. नवीन भारतीय आर्यभाषा मध्य मैथिलीक स्थान

आब देखल जाय जे एहि नभा सभक बीच मैथिली कतय ठाढ़ अछि। कहल जाइत अछि जे भारतमे आर्यजन दू दलमे अयलाह। पहिल दल (पूर्वागत आर्य) मध्यदेशमे बसल। दोसर दल (परागत आर्य) पहिल दलकेँ ओतयसँ बैलाय देलक। दोसर दल मध्य देशक चारू कात पड़ा गेल। ई तथ्य दूनू दलक भाषाक आधार पर लक्षित होइत अछि।

बात मैथिली आई हिन्दीक बीच निम्नलिखित तुलनासँ स्पष्ट होएत :

मैथिली	हिन्दी
ल - देखल, सुनल	आ - देखा, सुना
छ - छथि, अछि	ह - है, होगा
कर्मणि प्रयोग नहि - हम देखल	कर्मणि प्रयोग - मैंने देखा
ऐ = अइ - बैसल, अइसन	ऐ = अए - बैठा, ऐसा
ए - एकैस, एतेक	इ - इक्कीस, इतना
र - हर, फार, फर	ल - हल, फाल, फल
इ - बिनब	उ - बुनब

एहिना आओरो अनेक भाषिक (ओ सांस्कृतिक) साक्ष्य अछि। ग्रिअर्सन साहेब तदनुसार नभाक द्विधा विभाजन कयल : अन्तरंग उपशाखा आ' बहिरंग उपशाखा। एहिमे मैथिली बहिरंगमे पड़ैत अछि। यथा

(1) बहिरंग उपशाखा-

(क) पश्चिमोत्तर समूह - लहंदा, पश्चिमी पंजाबी, सिन्धी।

(ख) दक्षिण समूह - मराठी।

(ग) प्राच्य समूह - ओड़िया, बिहारी (मैथिली, मग़ही, भोजपुरी), बङला, असमिया।

(2) मध्यवर्ती उपशाखा-

(घ) मध्यवर्ती समूह - पूर्वी हिन्दी (अवधी, व्रज इत्यादि)।

(3) अन्तरंग उपशाखा-

(ङ) केन्द्रीय समूह-पश्चिमी हिन्दी, पंजाबी, गुजराती, भीली, खानदेशी, राजस्थानी।

(च) पहाड़ी समूह-पूर्वी पहाड़ी, केन्द्रीय पहाड़ी, पश्चिमी पहाड़ी।

एहि विभाजनमे मैथिली बहिरंग उपशाखाक प्राच्य समूहमे, बिहारीक अन्तर्गत राखल गेल अछि।

सुनीति कुमार चटर्जी ग्रिअर्सन साहेबक उक्त अन्तरंग-बहिरंग (इनर-आउटर) अवधारणाकेँ नहि मानैत छथि। ई नभाक वर्गीकरण एहि रूपेँ करैत छथि:

उदीच्य- सिन्धी, लहंदी, पूर्वी-पंजाबी।

प्रतीच्य- गुजराती, राजस्थानी।

मध्यदेशीय-पश्चिमी हिन्दी।

प्राच्य- कोशली (पूर्वी हिन्दी), बिहारी (मैथिली, मगही, भोजपुरी), ओड़िया, बंगला, असमिया।

दक्षिणात्य- मराठी।

एहि वर्गीकरणमे मैथिली राखल तँ गेल अछि बिहारीक अन्तर्गत, परन्तु मागधीमूलक भाषासभक वर्गीकरणमे मैथिली मगहीक संग केन्द्रीय समूहमे राखल गेल अछि आ' भोजपुरी एहि समूहसँ फुटाय पश्चिमी समूहमे सदानी (नागपुरिआ)क संग।

एतय धरि जतबा जे कहल ताहिसँ स्पष्ट भेल होयत जे पूर्वकालिक आ' समकालिक भारतीय भाषासभमे मैथिलीक स्थान कतय अछि।

§ 3. आर्यभारतीय साहित्यक प्रवाह

(1) पृष्ठभूमि

कालक प्रवाहमे भाषाक स्वरूप बदलैत रहैत अछि। भाषाक एहि कालक्रमिक परिवर्तनक अध्ययन भाषाशास्त्रमे Historical linguistics कहबैत अछि। प्रस्तुत पुस्तकमे एहि परिवर्तन किछु-किछु प्रक्रिया यत्र-तत्र देखाओल गेल अछि। भाषाक विवेचनक दोसर सरणि अछि Diachronic studies अर्थात् बहुबिन्दुक अध्ययन। यथा एक बिन्दु विद्यापतिक काल आ' दोसर बिन्दु मनबोधक काल ल' कयल गेल अध्ययन द्विबिन्दुक अध्ययन कहाओत। मोटा-मोटी बहुबिन्दुक अध्ययन तुलनात्मक विवेचन (Comparative studies) कहल जाइत अछि। एही बहुबिन्दुक अध्ययनक द्वारा भाषाक काल-विभाजन कयल जाइत अछि।

कालक प्रवाहमे भाषा जेना-जेना बदलैत जाइत अछि तेना-तेना ओकर साहित्यहुक रंग बदलैत अछि। प्रस्तुत पुस्तक मैथिली साहित्यक अध्येताक हेतु लिखल गेल अछि। तेँ सार रूपमे इहो देखाएब समीचीन होयत जे मैथिली भाषा आ' साहित्य कोना-कोना संग-संग बदलैत गेल अछि। भाषाक धारा कतहु-कतहु सहसा विच्छिन्न

भए जाइत अछि, परन्तु साहित्यक धारा तेना विच्छिन्न नहि होइत अछि। तेँ मैथिली भाषा आ' साहित्यक प्रवाह देखयबाक उपक्रमणिकाक रूपेँ मैथिलीसँ पूर्वहुक सिंहावलोकन कयल जाय।

लगभग 1200 ई.पू. मे वैदिक भाषा छल जाहिमे देवताक स्तुतिगीत भेटैत अछि। एकर तुलना आजुक स्तुति-गीतसँ कयल जाय सकैत आछि। एहिमे तीन वस्तु रहैत अछि : ध्यान (रूप ओ महिमाक वर्णन), अर्पण (हवि/नैवेद्य चढ़ायब), आ' वरयाचना (माङब)। यथा, अहाँ एहन थिकहुँ, अहाँ ई लिअ, अहाँ हमरा ई दिअ। ई संहिता-काल कहबैत अछि।

एकरा बाद लगभग 1000 ई.पू. मे वैदिक गद्य काल आरम्भ भेल। एहि कालक भाषा उत्तरवैदिक कहबैत अछि। एहिमे उक्त वैदिक उपासनाक अनुष्ठान-पद्धति (rituals) तथा किछु धार्मिक आख्यान आ' व्याख्या भेटैत अछि। एकर तुलना आजुक मिथिलाक विधि-व्यवहार (विशेषत: महिला द्वारा अनुष्ठित), व्रत-कथा, धार्मिक उपाख्यान आदिसँ कयल जा' सकैत अछि।

लगभग 500 ई.पू. मे आबि वैदिक भाषा संस्कृत भाषाक रूपमे आयल जाहिमे सूत्र-शैलीमे धार्मिक, नैतिक आ दार्शनिक विवेचन शास्त्रीय रीतिएँ कयल भेटैत अछि। ई सूत्र-काल कहबैत अछि। एकर दू-तीन सय वर्षक बाद एही संस्कृत भाषामे विविध स्मृतिग्रन्थ आ' पुराख्यान (रामायण, महाभारत, पुराण) लिखल गेल। एकरा स्मृति-पुराणकाल कहि सकैत छी। 100 ई.पू.क लगभग काव्य-काल आरम्भ होइत अछि जकर भाषा छल तँ संस्कृते परन्तु ओ अधिकाधिक आलंकारिक, एकरूपीय आ' नियमानुवर्ती भ' गेल।

एही धाराक माध्यमे समाजक निम्न स्तरक मुहमे आबि ओ संस्कृत भाषा पालि, प्राकृत आ' अपभ्रंश रूपमे परिणत होइत गेल। मैथिलीक विकासमे एहि भाषा सभक योगदान तँ बहुत अछि, किन्तु एकर साहित्यक प्रभावसँ मैथिली साहित्य किछु दूरे रहल।

उपर्युक्त 1200 ई.पू.-800 ई. कालखण्डक भाषा आ' साहित्यक प्रवाहक चरम परिणति थिक मैथिली भाषा आ' साहित्य।

(2) मैथिलीक काल-खण्ड

भाषा आ' साहित्य दूनूक दृष्टिएँ मैथिली परम्परानुसार तीन कालखण्डमे विभक्त अछि : प्राचीन मैथिली, मध्यकालीन मैथिली आ' नवीन मैथिली। एहि तीनूक विवेचन एहि पुस्तकमे कयल जायत, परन्तु क्रम बदलिकेँ अर्थात् पहिने नवीन तखन प्राचीन आ' अन्तमे मध्यकालीन, किएक तँ साहित्य सभसँ बेसी नमै मे अछि, ताहिसँ

कम प्रामै मे आ सभसँ कम ममै मे। महत्वो एही क्रमेँ अछि। सविस्तार विवे नमैक कयल जायत। प्रामै आ' ममैक विवेचनमे ओतबे बात कहल जायत जतब नमैसँ आन तरहक हो। उक्त तीन काल-खण्डसँ उपर एक सन्धि-काल अछि। जँ तकरहु जोड़ी तँ मैथिलीक चारि काल-खण्ड मानि सकैत छी। चारूक काल, अभिलक्षण आ' साहितियक वैशिष्ट्य एतय सार रूपमे देखल जाय।

(क) सन्धिकाल (700-1000)–एहि कालकेँ सन्धिकाल दू अर्थमे कहल। पहिल ई जे एहि कालक जे रचना भेटैत अछि ताहिमे तीन स्तरक भाषाक उपादान सभी सन्हिआयल अछि : प्राकृत, अपभ्रंश आ देसिल। दोसर ई जे एहिमे प्राच्य मागधी मूलक सभी भाषाक सामान्य उपादानसभ पाओल जाइत अछि। तहिँ एहि भाषाक साहित्यकेँ पाँचो बहिनि (मैथिली, मगही, असमिआ, बंगला आ' ओड़िआ) अपन सम्पत्ति मानैत अछि। एहि भाषाक निदर्शन चर्यापद, प्राकृत पैङ्गल, कीर्तिलता, कीर्तिपताका, डाकवचन आ' वर्णरत्नाकरमे भेटैत अछि। उक्त रचनासभमे मैथिलीक उपादान उत्तरोत्तर अधिक स्पष्ट होइत गेल अछि। यथा,

डाक (जिज्ञासा, जुलाइ-दिस, 1995, पृ. 49)
तिथि परिमाणह साठि दण्डा। से लए करह बारह खण्ड ॥
अद्दा भद्दा कित्तिक मूल। भनइ डाक सबेटा करे चूर ॥

कीर्तिलता (सम्पा. शशिनाथ झा, पृ. 47)
धरि आनए बाभन बडुआ। मथाँ चढ़ाबए गाइक चुडुआ ॥
फोट चाट, जनौअ तोड़। उपर चढ़ाबए चाह घोड़ ॥

कीतिपताका (सम्पा. शशिनाथ झा, पृ. 33)
गमन करथि गोहन जानि। डेग प्रति माङ्गथि पानि ॥
जतहु ततहु अबट धरथि। दान्ते आङ्गुलि दैन करथि ॥

एहि कालखण्डक भाषाक विषयमे शशिनाथ झाक कथन अदि-"एकरा विद्यापति स्वयम् अवहट्ठ कहैत छथि आओर ओहिसँ बहुत अंशमे समान भाषाकेँ देसिल। .. .. अत: विद्वान्‌लोकनि एकरा प्राचीन मैथिली कहबे उचित बूझैत छथि। (परन्तु) जेँ ई अवहट्ठक अनेक विशिष्टतासँ युक्त अछि तेँ एकरा अबहट्ठ वा प्राचीनतर मैथिली कहब हमरा संगत लगैत अछि।" (कीर्तिलताक भूमिका, पृ. 14)। हमरा जनैत ई प्राचीनतर मैथिली सन्धिकालीन मिश्र मैथिली थिक आओर एकर अपभ्रंश सेहो ने नागर अपभ्रंश थिक, ने मागध अंपभ्रंश, ई थिक मिथिलाऽपभ्रंश जकरा विद्यापति अबहट्ठ कहलनि। ज्ञातव्य जे ई अबहट्ठ विद्यापतिकालीन भाषा नहि थिक। अपन कालसँ पूर्वकालीन भाषामे काव्यरचना करब प्राचीन परम्परा छल।

एहि कालक साहित्यमे दू प्रकारक विषय भेटैत अछि : सहजिआ सम्प्रदायक धार्मिक ओ आध्यात्मिक गीत तथा वीरगाथा वा चरित काव्य। जेँ वीरगाथाक हेतु परम्परानुसार अपभ्रंश/अबहट्ठ उपयुक्त बुझयलनि तहिँ विद्यापति स्वकालीन मैथिलीमे नहि लिखि पूर्वकालीन (सन्धिकालीन) भाषामे कीर्तिलता, कीर्तिपताका आ' हरिकेलि लिखल। एहिसँ भाषा आ' रचना-प्रवृत्तिक सहसम्बन्ध स्थापित होइत अछि।

(ख) प्राचीन काल (1000-1600)–प्राचीन मैथिलीक रचना तँ तेरहम शतक सँ भेटैत अछि, परन्तु भाषाक स्वरूप सय-दूसय वर्ष पूर्वहि निखरि चुकल छल। अतः साहित्यक दृष्टिएँ प्राचीन काल भनहि तेरहम शतकसँ आरम्भ मानल जाय, भाषाक दृष्टिएँ ताहिसँ बहुत पूर्व मानय पड़त।

मैथिली साहित्यक विद्वान् लोकनिक बीच एहि काल-विभाजनक सम्बन्धमे बड़ मतभेद अछि। यथा

	प्राचीन काल	मध्य काल	नवीन काल
उमेश मिश्र	1000-1300	1300-1800	1860 +
सुभद्र झा	1000-1300	1300-1800	1860 +
जयकान्त मिश्र	1300-1600	1600-1860	1860 +
दुर्गानाथ झा	........-1300	1300-1860	1860 +
राधाकृष्ण चौधरी	900-1350	1350-1830	1830 +

मोटा-मोटी मतभेद विद्यापतिकेँ ल' क' अछि। केओ हिनका प्राचीनकालमे रखैत छथि तँ केओ मध्यकालमे। दुर्गानाथ झा चतुरतापूर्वक मध्यकालकेँ दू खण्डमे बँटलनि : पूर्व मध्यकाल 1300-1700; उत्तर मध्यकाल 1700-1860.

हमरा जनैत ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकरमे मैथिलीक जे स्वरूप भेटैत अछि, व्याकरण दृष्टिएँ लगभग सेह स्वरूप विद्यापतिक प्रामाणिक गीत सभसे अछि। तदुत्तर बहुत दिन धरि भाव आ भाषा दूनूमे विद्यापति तनिके अनुकरण-अनुसरण होइत रहल, तेँ 1600 ई. धरिक कालक रचनाकेँ प्राचीन मैथिली मानब समीचीन होएत। एकर आरम्भ बिन्दु तीन सय वर्ष पूर्व राखल, किएक तँ चर्यापदक भाषाकेँ वर्णरत्नाकरक भाषा पर उतरि अयबामे एतबा समय अवश्य लागल होयत। एहि अवधिक कोनो रचना नहि भेटैत अछि से आन बात।

छओ सय वर्षक अवधि बहुत पैघ लगैत अछि। एतेक दीर्घ काल धरि भाषा स्थिर रहत से सहसा विश्वसनीय नहि लगैत अछि। परन्तु स्थिति इएह अछि। तकर कारण भेलाह विद्यापति ठाकुर। महाजनो येन गतः स पन्थाः। रमानाथ झाक शब्दमे

"विद्यापति ठाकुरक रचना ताहि रूपेँ" लोकप्रिय अथच चमत्कारक भेल जे सँ मैथिली साहित्यक एकमात्र आदर्श ओएह विद्यापति ठाकुरक रचना भ' एहिमे हम इहो जोड़ब जे साहित्यहिक नहि, भाषा तकरो आदर्श हुनके भाषा भ' आओर जहिना साहित्यमे, तहिना भाषामे सेहो घोर जड़ता आबि गेल।

एहि कालक सम्पूर्ण साहित्य, वर्णरत्नाकरकेँ छाड़ि, पद्यमय रहल। एतेक जे नाटकहुमे केवल गीत मैथिलीमे अछि। गद्य संस्कृत वा प्राकृतिमे भेटत, ज्योतिरीश्वरक धूर्तसमागम, विद्यापति ठाकुरक गोरक्षविजय, उमापति उपाध्यायक पारिजातहरण इत्यादि। गीतहुमे भाव-भूमि ओएह जे विद्यापतिक गीत सभक राधा-कृष्ण आ' शिव-पार्वती आलम्बन तथा शृङ्गार आ' भक्ति भाव।

एहि कालक भाषाक विशद वर्णन आगाँ [109-122] देखू।

(ग) मध्य काल (1600-1860 ई.) - ई मैथिलीमे वस्तुतः गद्य काल थिक ओना मैथिली साहित्यक आरम्भे गद्यग्रन्थ ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकर सँ भेल, परन्तु तकरा अपवादे बूझू। पद्यकेँ तँ विद्यापतिक भाषा ग्रसित क' लेलक परन्तु सौभाग्य वश गद्य एहिसँ बाँचल रहल। विचित्र बात जे केन्द्रीय मिथिलामे एहि कालमे वा तकरा बादो जे नाटक सभी लिखल गेल ताहिमे केवल गीत मैथिलीमे अछि, संवाद मैथिलीमे नहि, केवल संस्कृत आ' प्राकृतमे अछि। एकर विपरीत जे नाटक केन्द्रसँ दूर नेपाल आ' असममे लिखल गेल ताहिमे गीत आ' संवाद दूनू मैथिलीमे अछि। एही नाटक सभक गद्य-संवादमे मध्यकालीन मैथिलीक दर्शन होइत अछि। ममै साहित्यसँ बाहर किछु गद्य शासन-सम्बन्धी दस्तावेज, चिट्ठी-पत्री, मौखिक व्रतकथा आदिमे सेहो भेटैत अछि। विशेष विवरण आ' निदर्श रामदेव झाक एक आलेखमे भेटत (दे. मैथिली गद्यक विकास, सम्पा. मोहन भारद्वाज, पृ. 46-62)।

विचित्र बात जे सुभद्र झा मध्यकालीन मैथिलीक उल्लेख तँ कालविभाजनमे कयल [पृ. 42] परन्तु आगाँ भाषाक स्वरूप-विवेचनमे मध्यकालीन मैथिलीक चर्चा कदाचिते कयलनि-सर्वत्र प्राचीन मैथिली, आधुनिक मैथिली आ' विभाषा इएह तीन कोटि देखबैत गेलाह। से किएक ? मध्यकालीन मैथिली वास्तवमे किछु प्राचीन आ' किछु आधुनिक उपादानसँ बनल अछि। से दूनू प्रकारक उपादानक वर्णन दूनू विभाग मे गतार्थ भ' गेल। तखन मध्यकालीन मैथिलीमे हुनका एहन कोनो वस्तु नहि भेटलनि जे फूट क' देखाबथि। दोसर बात ई जे मध्यकालीन मैथिलीमे पद्य तँ विद्यापतिहिक भाषामे अछि। एहि कालक गद्य विशेष क' नेपालीय आ' असमीय नाटक सभक संवादमे भेटैत अछि; किन्तु तकरा सुभद्र झा छूबे नहि कयलनि। एही गद्यमे मध्यकालीन मैथिलीक स्वरूप देखैत छी। एकर मुख्य विशेषता अछि :

- आदरार्थक मध्यम पुरुष इहा, नमै अहाँ, यथा, हे नाथ, इहाय कृष्णक सङ्ग प्रवेश करु "हे नाथ, अहाँ........ ।"
- बहुपदीय क्रियापदक प्रयोग, यथा देखै छि, प्रामै देखिअ, नमै., देखैत छी, वा देखैत्री; हमे जाइ छव, नमै जाइत छी, तुल. अंगिमका हमे जाइ छों ।
- संयुक्त व्यंजनक प्रयोग, यथा इहा तीनिहु व्यक्तिक अपूर्व रूप, अद्‌भुत स्थान, सुन्दर बाजब ।
- वाक्यमे सहकारी क्रियापद (auxiliary verb) क बहुत कम प्रयोग । यथा बड़ उत्तम स्थान [अछि लुप्त], ई सरोवर [थिक लुप्त] एतए रहब, कृष्ण त्रैलोक्यनाथ [थिकाह लुप्त], हुनका पुत्र सञे प्रीति [छैन्हि लुप्त] ।
- करणकारकक प्रत्यय य (प्रा मै. ञे), यथा राजाक आज्ञाय रथ बोलाय आनब "राजाक आज्ञासँ.......) ।

एहि प्रकारक आनो बहुत-रास वैशिष्ट्य अछि । एहि विशेषता सभकेँ कालिक कही कि क्षेत्रीय सेहो विचारणीय थिक । विशेष विवेचन आगाँ (125+) देखू ।

मध्यकालक साहित्यक प्रवृत्ति पौराणिक कथाकेँ नाट्य रूप देब छल । किछु सम्बर अर्थात् स्वयंवर काव्य मौखिक परम्परामे भेटैत अछि । नाटकहुमे ई स्वयंवर हरण नाम सँ आयल अछि, जेना रुक्मिणीहरण, उषाहरण इत्यादि । एहि कालक नाटक सभमे कथा पौराणिक रहितहुँ संस्कृति (विशेषत: विवाहक विधि-व्यवहार) शुद्ध मिथिलाक झलकैत अछि आओर तकर प्रभावेँ भाषा सेहो व्यावहारिक (सरल सहज) होइत गेल अछि । एही कालमे शासन आ' राजस्व सम्बन्धी लिखा-पढ़ीमे अरबी-फारसी शब्दक प्रवेश सेहो भेल ।

पद्यमे मध्यकालीन मैथिलीक उत्तम निदर्श थिक मनबोधक कृष्णजन्म जाहिमे प्राचीन आ' नवीन मैथिलीक संगम स्पष्ट देखि पड़ैत अछि । जेना, प्राचीन जे बल "जकरा बलेँ", कोन परि "कोन तरहेँ", करिअ "करैत छी", काहुसँ "कनिकहुसँ", लागू "लगलीह", धरि लेल "धए लेल", कहबा लागु "कहए लगलाह", नवीन-लगै अछि, सिबक इआर, होइछ, लगइछ, कएलन्हि, बन्धलक, इत्यादि ।

(घ) आधुनिक काल (1860+) – आधुनिक मैथिलीक सभसँ पैघ विशेषता थिक क्रियापदक रूपविस्तार । प्रामैमे क्रियापदमे केवल एक प्रत्यय रहैत छल, कदाचिते दू । नमैमे तीन प्रकारक प्रत्यय आओर दू गोट आन्विति (agreement) अछि, तकर फलस्वरूप क्रियापद-रूपावलीक अपार विस्तार भ' गेल । यथा, प्रामैमे सामान्य भूत कालक क्रियापदक रूप केवल तीन-चारि गोट भेटैत अछि, जेना हमे देखल/देखलहुँ, तोहेँ देखलह, तञे देखले, ओ देखल । परन्तु नमैमे एकर रूप लगभग

21 गोट होइत अछि (देखू सारिणी 14)। एकर अतिरिक्त पक्ष-सूचक बहुपदीय जेना देखल अछि, देखि रहल अछि, देखने अछि इत्यादि भेदोपभेदसँ ई एकैस गुना भय' जायत। दोसर विशेषता थिक कारक-चिह्नक पुनर्जीवन। ज्ञातव्य किछु-किछु प्रामैमे आ' विशेष क' ममैमे कारकचिह्न लुप्तप्राय भ' गेल छल। कालमे तकर पूर्ति भेल आ' अधिकरण-चिह्न जे प्राभामे एक छल, तकरा स्थानमे आयल। करणमे एँ सीमित भ' गेल, सँ चिह्न करण आ' सम्प्रदान दूनूमे चलि पड़ल अनेक प्रकारक बहुपदीय क्रियापद चलल (देखू 87.)

प्रस्तुत पुस्तकमे एहि नवीन मैथिलीक वर्णन विस्तारपूर्वक कयल गेल अछि। आ' प्रामैमे ओतबे बात देखाओल अछि जतबा नमैसँ भिन्न अछि।

एहि कालमे आबि साहित्य पौराणिक सीमा-रेखाकेँ टपि लौकिक धरातल पर उतरल आ' विविध विषय-क्षेत्रकेँ व्याप्त करैत गेल। एहि क्रममे भाषाक सामर्थ्य आ' समृद्धि सेहो बढ़ैत गेल।

उपर संस्कृत साहित्यक काल-खण्ड सभ एहि हेतु देखबाक थिक जे मैथिली भाषा आ' साहित्यक पृष्ठभूमि आ' मुख्य प्रेरणा स्रोत इएह संस्कृत-साहित्य रहल अछि।

यद्यपि नभा मभाक उत्तराधिकारी कहल जाइत अछि तथापि आश्चर्य जे मैथिली मभा-परम्परासँ दूर, केवल प्राभा-परम्परासँ अनुप्राणित रहल। किएक? मभाक अवलम्बन बौद्ध आ' जैन सम्प्रदायमे भेल आ' एहि दूनू सम्प्रदायसँ मैथिल समाज हटलै रहल। किंच, मभामे जे व्यंजन-लोपक अत्यधिक प्रवृत्ति छल से क्रमशः अनेक कारणेँ घटैत गेल आ' फलस्वरूप मभाक तद्भव शब्द पुनः अधर्धतत्सम रूप लैत गेल। जेना

प्राभा	धर्म	जन्म	प्रदेश	सकल	वचन
मभा	धाम	जाम	पदेस	सअल	वअण
नभा	धरम	जनम	परदेस	सगर	बचन

अतः बहुत अंशमे मैथिली मभाक नहि, प्राभाक निकट अछि। अपभ्रंश संस्कृत आ' मैथिलीक बीच संक्रमणकालीन अवस्था थिक।

प्रश्न उठैत अछि जे मैथिलीकेँ तँ केवल प्राभा आ' मभासँ सम्बन्ध छैक, तखन मूभा आ' तकर आन-आन कुलक चर्चा मैथिलीक प्रसंगमे किएक? उत्तर सोझ अछि। मैथिलीक बहुतो उपादान (शब्द, प्रत्यय, संरचना आदि) स्पष्ट वा अस्पष्ट रूपेँ मूभामे आ' तकर ईरानी, स्लाभोनिक आदि शाखामे पाओल जाइत अछि जे एहि सभ भाषाकेँ एक पारिवारक सदस्य बनबैत अछि। पारिवारिक सम्बन्ध तँ एकरा केवल आभासँ छैक, परन्तु किछु-किछु उपादान एहिमे कतोक आनो कुलक ज्ञात-अज्ञात, जीवित-मृत अनेक भाषासँ आयल अछि। विशेष विवेचन आगाँ कयल जायत।

§ 4. मैथिलीक लिपि : ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

लिपिक जन्म चित्रसँ भेल। एकर आभास आजुक किछु अंकमे भेटैत अछ, जेना । सँ 1; = सँ 2 ; ≡ सँ 3, :: सँ 4 इत्यादि। चित्र झटझट लिखबाक कारणेँ अपन यथार्थ आकृतिसँ विचलित होइत-होइत रैखिक प्रतीक भ' गेल। एहि क्रमेँ विश्वक विभिन्न भागमे अनेक प्रकारक लिपि विकसित भेल। एहिमे चारि बेसी पसरल :

(1) चीनी लिपि-ई एखनहु चित्रात्मक अवस्थाकेँ द्योतित करैत अछि आ' मूलतः वस्तुवाचक अछि, तद्द्वारा ध्वनिवाचक। एहि कारणेँ एकर वर्णमालामे अनेक सय वर्ण (रैखिक प्रतीक) अछि। ई ऊपरसँ नीचाँ लिखल जाइत अछि। एकर विविध रूपान्तरक प्रयोग सिनो-थाइ भाषा-परिवारमे, चीन, जापान, इंडोनेशिआ आदि देशमे होइत अछि।

(2) अरबी लिपि-एहिमे व्यंजन-वर्ण तँ पर्याप्त अछि किन्तु लघु स्वर अधिकतर सन्दर्भसँ अनुमानगम्य होइत अछि। सूक्ष्म लेखनमे स्वर-संकेत लगायब पाछाँ चलल। ई सम्पूर्ण मध्य एशिआमे अरबी, फारसी, पश्तो, सिन्धी, काश्मीरी, उर्दू आदि भाषामे चलैत अछि। ई दहिनासँ बामा लिखल जाइत अछि।

(3) रोमन लिपि-सम्प्रति ई मुख्यत अङरेजीक लिपि थिक। रूसी, जर्मन इत्यादि प्रायः सभ यूरोपीय लिपि एकरे सगोत्र थिक। एहिमे स्वर आ' व्यंजन दूनू अछि, किन्तु ह्रस्व-दीर्घ-भेद नहि अछि। ब्रिटिश साम्राज्यक प्रतापेँ ई विश्व भरिमे पसरल आ' विश्वक बहुतो भाषा, विशेषतः छोट-छोट भाषा, जकरा अपन लिपि नहि छैक, एहि लिपिमे लिखल जाइत अछि। सुन्दरता, सरलता आ' स्पष्टता एहि तीन गुणेँ ई सभ क्षेत्रमे अधिकाधिक प्रश्रय पओने जा रहल अछि। अरबीक विपरीत ई दहिनासँ बामा लिखल जाइत अछि।

(4) भारतीय लिपि-सुदूर अतीतमे भारत भरिमे जे लिपि चलैत छल तकर नाम थिक ब्राह्मी। एही लिपिसँ आजुक सभटा भारतीय लिपि बहरायल अछि। तेँ भारतीय लिपि ई नाम, चीनी आदि नाम जकाँ, एक लिपिक नहि, अपितु ब्राह्मीसँ बहरायल सभ लिपिक सामान्य नाम थिक। एहिमे प्राभामे अपेक्षित सभ ध्वनिक प्रतीक अछि; तेँ ई भारतीय भाषासभक हेतु परम उपयोगी अछि। सभसँ पहिने एहीमे वैज्ञानिक रीतिएँ क्रम-विन्यास क' वर्णमाला बनल। एकर दोसर विशेषता थिक इकार आदि मात्राक कल्पना। एहिसँ स्थान आ' हस्तव्यापार दूनूमे लाघव आयल, परन्तु मात्रा आ' संयुक्ताक्षरक कारणेँ एकर यान्त्रिक उपयोगमे किछु असुविधा आयल। खरोष्ठी सेहो भारतीय लिपि मानल जाइत अछि, किन्तु ई सुदूर अतीतहिमे लुप्त भ' गेल।

§ 5. तिरहुता लिपिक उद्‌भव ओ विकास

विवेचनीय विषय अछि तिरहुता लिपिक उद्‌भव आ' विकास। तखन एकेर भूमिका एहि हेतु बान्हल जे दीर्घ ऐतिहासिक आ' भौगोलिक परिप्रेक्षमे तिरहुताक विकास दृष्टिगत हो। तिरहुताक उद्‌भव उक्त भारतीय लिपि ब्राह्मीसँ भेल। ई लिपि सभसँ पहिने सम्राट् अशोकक शिलालेखसभमे (259-222 ई.पू.) भेटैत अछि, जे भारतक विभिन्न भागमे कनेक-मनेक रूपभेदक संग पाओल गेल अछि, जे भारतक विभिन्न भागमे कनेक-मनेक रूपभेदक संग पाओल गेल अछि। एहिसँ प्रतीत होइत अछि जे ब्राह्मी अशोकसँ बहुत पूर्वहि पूर्ण विकसित भ' चुकल छल आओर सम्भवतः एकर दू रूपान्तर प्रकट भ' चुकल छल-उत्तरभारतीय आ' दक्षिणभारतीय। पहिलसँ तमिल, तेलुगु, कन्नड़ ओ मलयालम बहरायल आ' दोसरसँ तिरहुता, बंगला, असमिया, ओड़िया, नागरी, गुजराती, पंजाबी आ' नेवारी।

ब्राह्मीसँ मैथिली कोना विकसित भेल से देखल जाय। एहि हेतु मिथिलासँ बाहर जयबाक प्रयोजन नहि, किएक तँ विकासक सभ सोपान, मूल ब्राह्मी सहित, मिथिलाहिमे पाओल गेल अछि।

प्रथम अवस्था-चम्पारन जिलाक लौरिआ गाममे अशोक स्तम्भमे जे शिलालेख अछि से ब्राह्मीक प्रथम अवस्थाक मानल जाइत अछि।

द्वितीय अवस्था-वैशाली उत्खननमे तथा अन्यत्र जे बहुत-रास सील पाओल गेल अछि तकर लेख सभ ब्राह्मीक द्वितीय अवस्था सूचित करैत अछि। ई गुप्त-लिपि वा कुटिल लिपि कहबैत अछि।

तृतीय अवस्था-ब्राह्मीक ई अवस्था पालवंशक राजालोकनिक बहुतो उत्कीर्ण अभिलेखमे भेटैत अछि। ई अभिलेखसभ मिथिलाक पूर्व आ' दक्षिण भागमे तथा मगधक पूब भागमे यत्र-तत्र पाओल गेल अछि। ई वैदेही लिपि वा गौडीय लिपि कहल जा सकैत अछि।

चतुर्थ अवस्था-एहि अवस्था लिपिकेँ मागधी लिपि वा प्राक्-तिरहुता कहि सकैत छी। एहीसँ प्राचीन बंगला, असमिया, ओड़िआ आ' तिरहुता बहरायल अछि। एहि अवस्थाक लिपि नालन्दा तथा विक्रमशील महाविहारक पाण्डुलिपिसभमे देखल जाइत अछि। ई पाण्डुलिपि सभ बिहार रिसर्च सोसाइटी, पटनामे सुरक्षित अछि। बंगीय साहित्य परिषद्, कलकत्तामे सुरक्षित चण्डीदासक श्रीकृष्णकीर्तन पांडुलिपि तथा नोपालक पशुपति शिलास्तम्भ (1228 ई.) सेहो एहि अवस्थाक लिपिमे अछि।

पञ्चम अवस्था-एहि अवस्थामे आबि ई मिथिलामे अपन पूर्णतः स्वतन्त्र क्षेत्रीय रूप प्राप्त कएलक जे आइ धरि सुस्थिर अछि। एकर प्राचीनतम उत्कीर्णलेख अन्हराठाढ़ीक विष्णुमन्दिरक शिलालेख (1097 ई.) थिक। तालपत्र लेखमे पक्षधर

मिश्रक हाथेँ लिखल हरिवंश (1445 ई.; बिहार रिसर्च सोसाइटीमे सुरक्षित) तथा विद्यापति ठाकुरक हाथेँ लिखल श्रीमद्भागवत (ल.सं. 309) केर दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालयमे छाया प्रति (मूल चोरायल) उल्लेखनीय अछि।

चतुर्थ अवस्थामे आबि मागधी लिपि चारि रूप धारण कयलक : तिरहुता, बंगला, असमिया आ' ओड़िया। अधिक भेद आयल ओड़ियामे। (वर्तुल शिरोरेखाक कारणेँ) असमिआ आ' बंगलाक बीच सम्प्रति छापामे एके-दुइ अक्षरक भेद अछि। बंगलामे र अक्षर त्रिभुजक नीचाँ बिन्दु द, लिखल जाइत अछि, किन्तु असमिआमे त्रिभुजक पेटमे रेखा द' (तिरहुता जकाँ)। बंगलामे व नहि अछि, असमिआ मे ई अछि; त्रिभुजक नीचाँ दक्षिण तिर्यक् रेखा द' लिखाइत अछि। तिरहुत आ' बंगला बहुत दिन धरि मानू एके रहल, परन्तु पाछाँ दूनूमे बहुत अन्तर आबि गेल।

§ 6. तिरहुता आ' बंगलामे अन्तर

उपरहि उपर देखनिहार बहुतोकेँ ई भ्रान्त धारणा छनि जे तिरहुता आ' बंगलाक बीच अन्तर नाममात्र अछि। यदि परिशिष्ट 1 केर सारणीमे एक-एक अक्षरकेँ तुलना क' देखी तँ ई भ्रम अनायास दूर भ' जायत। कुल 51 सरल अक्षरमे 17 गोट दूनूमे पूर्णत: भिन्न-भिन्न अछि। (देखू क्रमांक 1-10, 15, 23, 40, 45, 47 आ 51) अर्थात् दूनू लिपिमे 33% अन्तर। तदतिरिक्त उकारक मात्रा कतोक अक्षरमे दूनूमे भिन्न-भिन्न रूपक अछि (देखू 68, 70-75, 77, 79, 80-82 तथा 84)। संयुक्ताक्षर बंगलामे किछु सरल अछि तँ तिरहुतामे जटिल (देखू 85, 86, 87, 95, 96, 110, 124)। संख्या-लेखमे तिरहुता बंगलासँ भिन्न अछि (देखू 122, 129, 130, 133 अर्थात् अन्तर 50% सँ अधिक)। अनुस्वार बंगलामे दहिना दिस रहैत अछि तँ तिरहुतामे, नागरीजकाँ, माथपर। एतेक अन्तर रहितहुँ आनुवंशिक आ' आभासिक साम्य रहबाक कारणेँ अज्ञ जन एक बूझि लैत छथि।

§ 7. मैथिलीक अन्यान्य लिपि

मैथिलीक अपन लिपि तिरहुता थिक। परन्तु ज्ञातव्य जे ने कोनो भाषा लिपिविशेषसँ बान्हल अछि आ' ने कोनो लिपि भाषाविशेषसँ। कोनहु लिपिमे कोनो भाषा लिखल जा सकैत अछि। बहुतो भाषा अनेक लिपिमे लिखलो जा रहल अछि। प्रकृष्ट उदाहरण अछि कोङ्कणी जे चारि क्षेत्रमे चारि लिपिमे लिखल जाइत अछि। तहिना मैथिली मे तिरहुता, नेवारी, कैथी आ' नागरी एहि चारि लिपिक प्रयोग विभिन्न देश, काल आ' पात्रक अनुसार पाओल जाइत अछि। नेपालमे मल्ल-शासन काल धरि नेवारी (तिरहुताक संग-संग) चलैत रहल, तकरा बाद ओतय नेपाली (पहाड़ी) भाषाक प्रवेश होइतहि नेवारी लसकि गेल। भारतीय भागमे आरम्भसँ हाल धरि

एकमात्र तिरहुता चलैत रहल। अठारहम शतकमे आबि लौकिक व्यवहारमे, विशेष राजस्वसम्बन्धी बही-खातामे, कैथी लिपि चलल। बीसम शतकक आरम्भमे नागरी लिपि क्रमशः पसरय लागल। तकर दू कारण भेल। पहिल, ब्रिटिश सरकार आधुनिक शिक्षा चलाओल तकर माध्यम नागरी लिपि आ' हिन्दी भाषा राखल गेल एहिसँ मैथिली लुप्त नहि, केवल दुर्बल भेल, परन्तु तिरहुता तँ लुप्तप्राय भ' गेल दोसर कारण भेल यान्त्रिक मुद्रण-प्रणाली। एहि सुविधासँ तिरहुता आइ धरि [illegible] अछि। तेँ नागरीक शरण लेबय पड़लैक। जँ एहि सुविधाक लोभेँ नागरीकेँ नहि अपनाय बंगला लिपि अपनाओल गेल रहैत तँ तिरहुता एना तिरोहित नहि होइत। परन्तु ताहि दिन हिन्दी भाषा आ' नागरी लिपि देशभक्तिक मानू प्रतीक भ' गेल छल, तँ तत्कालीन मैथिलीक अनुरागीलोकनि नागरिए दिस झुकलाह, बंगला दिस नहि।

पछाति तिरहुताकेँ पुनर्जीवित करबाक कामना जगैत रहल। काँटा बनबाओल गेल। ताहिमे किछु पोथिओ छपल। किछु पोथी लिथोग्राफी प्रक्रियासँ सेहो छपल परन्तु तिरहुता तिरोहिते होइत गेल।

तिरोहित अवश्य भेल, मुदा लुप्त नहि भेल। संस्कृतक पण्डितलोकनि तथा कुलीन आ प्रबुद्ध ब्राह्मण आओर कायस्थलोकनि एखनहु एकर व्यवहार वैयक्तिक आ सांस्कृतिक लिखा-पढ़ीमे करैत छथि। अधिकतर मैथिलीक पुस्तकमे शीर्षक नागरीक संग-संग तिरहुतामे रहैत अछि। पुनरुद्धारक कामना तँ अवश्य जागल मुदा प्रयास बड़ मन्द। तिरहुता सिखबाक बहुतो पोथी छापल गेल। प्रायः सभ पत्रपत्रिकामे एक आध पृष्ठ तिरहुता वर्णमाला छापल जाइत अछि आ' ताहिसँ प्रबुद्ध मैथिल युवक लोकनि सिखबामे लागल छथि।

परिशिष्टमे तिरहुता लिपिक स्वरूप आ' किछु नमूना देखल जाय।

§ 8. मैथिलीभाषी जनसंख्या आ' क्षेत्र

(1) जनसंख्या

कतेक लोक मातृभाषाक रूपमे मैथिली बजैत अछि से ठीक-ठीक कहब कठिन। कारण अनेक अछि। भारतक जनगणनामे मैथिलीभाषी हिन्दीभाषीमे समाय देल गेलाह। ग्रिअर्सन साहेब (1928 ई. मे) जेना-तेना मैथिलीभाषीक आकलन कयल। एहि सभसँ एहन-सन निष्कर्ष बहराइत अछि जे झारखंड सहित बिहारक जतबा जनसंख्या अछि तकर तृतीयांश मैथिलीभाषीक संख्या मानल जाय सकैत अछि। सम्प्रति 2002क जनगणनाक अनुसार बिहार आ' झारखंड दूनू राज्यक जनसंख्या 109, 788, 224 अछि। तकर तृतीयांश 36,596,074 मैथिलीभाषीक संख्या

मोटा–मोटी सिद्ध होइत अछि। नेपालमे मैथिलीभाषीक संख्या (2002क जनगणनानुसार) 2,797,585, एकर विभाषा बज्जिकाभाषीक 237,947 तथा अंगिकाभाषीक 15,892। फलत: नेपालमे मैथिलीभाषीक कुल संख्या 3,052,421 अछि। दूनू देशक संख्या मिलाए 39,648,495।

जॉन स्टोनक सर्वेक्षणक अनुसार विश्व भरिमे मैथिलीभाषीक संख्या (1993 मे) 24,260,000 छल (भारतमे 22,000,000, नेपालमे 2,191,900, अन्य देशमे 6,800)। एक अन्य अन्तरराष्ट्रीय सर्वेक्षणक अनुसार विश्व भरिक भाषामे मैथिलीक स्थान (1996 ई. मे) चालिसम छल।

(2) मैथिलीभाषी क्षेत्र

मैथिलीभाषी क्षेत्र सम्प्रति मिथिला नामसँ प्रसिद्ध अछि। एही नाम पर एहि क्षेत्रक भाषा मैथिली कहबैत अछि। अतीतमे एहि क्षेत्रक नाम छल विदेह। मिथिला एकर राजधानी छल। गुप्त–कालमे एकर नाम तीरभुक्ति पड़ल। एखनहु मिथिलाक नामान्तर तिरहुत प्रसिद्ध अछि आ' एही नाम पर मैथिलीक लिपि तिरहुता कहबैत अछि। मिथिलाक पारम्परिक भौगोलिक वर्णन चन्दा झा एहि रूपेँ कयने छथि :

गंगा बहथि जनिक दक्षिण दिस पूर्व कौशिकी धारा।
पश्चिम बहथि गंडकी उत्तर हिमवत बल विस्तारा॥
कमला त्रिजुगा अमृता धेमुरा वागमती कृतसार।
मध्य बहथि लक्ष्मणा प्रभृति से मिथिला विद्यागारा॥

तहिआ एकर विस्तार पूर्व–पश्चिम लगभग 290 किमी. आ' उत्तर–दक्षिण लगभग 193 किमी. (लगभग 55,950 वर्ग किमी.) छल। परन्तु आइ मिथिलाक सीमा बहुत बदलि गेल अछि। सम्प्रति मिथिला ने राजनैतिक एकक थिक, ने प्रशासनिक। तेँ एकर सीमांकन मैथिली भाषा आ' मैथिल संस्कृति एहि दुइए आधार पर कयल जाइत अछि। भाषाक आधार पर सीमांकन भारतीय भाषा सर्वेक्षणमे कयल गेल। सैह एखनहु मान्य अछि। एकर मानचित्र परिशिष्ट 2 मे देखू। तदनुसार एकर क्षेत्रफल लगभग 19,620 वर्ग किमी. होइत अछि। ज्ञातव्य जे एहिमे नेपाल स्थित मैथिलीभाषी क्षेत्र शामिल नहि अछि। मैथिलीभाषी क्षेत्र 25° आ' 27° उत्तर अक्षांश तथा 84° आ' 87° पूर्व देशान्तरक बीच पड़ैत अछि। एकर उँचाइ समुद्रतलसँ लगभग 52 मीटर अछि। एहि क्षेत्रक न्यूनतम तापमान 7° सेंटीग्रेड (मकर संक्रान्ति दिन) आओर अधिकतम तापमान 42° सेंटीग्रेड (कर्कसंक्रान्ति दिन) रहैत अछि। एत' वर्षा साल भरिमे लगभग 127 सेंमी होइत अछि।

एहि क्षेत्रमे अतीतमे कोल, किरात, द्रविड़, आर्य इत्यादि अनेक प्रजातिक लोक बसैत छल। आजुक मैथिलीभाषी समाज एही सभ प्रजातिक सामासिक रूप थिक जे

एक भाषा आ' एक संस्कृतिसँ आबद्ध अछि। एहि समाजमे अनेकानेक वर्ग-उपवर्ग आ' जाति-उपजाति अछि। एहिमे बहुलताक्रमे मुख्य जाति अछि यादव, ब्राह्मण, राजपूत, दुसाध, कोइरी, चमार, शेख, भूमिहार, कुरमी, मलाह, जोलहा, तेलि, कानू, नोनिआ, धानुक, मुसहर, ताँती, कायस्थ, कमार, हजाम, धुनिया, कुम्हार, धोबि, कलबार, केओट, सोनार, अमात, कहार, कुजरा, सूँड़ि, पठान, हलुआइ इत्यादि। एहि सभ जाति-उपजातिक मातृभाषा मैथिली थिक।

§ 9.मैथिलीक विभाषा

मैथिलीमे वैभाषिकता एक विकट समस्या बनल अछि। शैक्षिक, आर्थिक, जातीय आ' सामाजिक विषमता एहि वैभाषिकताक मूल कारण थिक। एहि चारू प्रकारक विषमतासँ कतेक केहन-केहन विभाषा व्याप्त अछि तकर अध्ययन मानू नहिए भेल अछि। हँ, क्षेत्रक आधार पर जे विभाषा सभ लक्षित होइत अछि ताहिमे सभसँ स्पष्ट अछि पूर्वीय विभाषा जे अंगिका कहबैत अछि। दोसर विभाषा जे वज्जिका नामसँ जागल अछि ताहिमे भेदक तत्त्व बहुत अल्प आ' अंशतः उच्चारणजन्य थिक। तथापि ग्रिअर्सन साहेब, सुभद्र झा आ' गोविन्द झा जे मैथिलीक विभाषासभक निरूपण कयलनि अछि तदनुसार मैथिलीक क्षेत्रीय विभाषा चारि गोट लक्षित होइत अछि। यथा,

केन्द्रीय विभाषा-एकर मुख्य विशेषता थिक ध्वनि-संकोचन वा अपूर्ण उच्चारण।

पूर्वी विभाषा अंगिका-एकर मुख्य विशेषत थिक बंगला जकाँ अन्तोदात्तता अर्थात् शब्दक अन्तिम ध्वनि पर स्वराघात जाहिसँ ओ प्रलम्बित आ' वर्तुल जकाँ भ' जाइत अछि। एहिमे मैथिलीक बहुत-रास प्राचीन स्वरूप सुरक्षित अछि। एकर केन्द्र थिक पुरनिअँ।

दक्षिणी विभाषा-एकर मुख्य विशेषता थिक असमापी क्रियापदक अन्तिम ए सदा सुरक्षित रहब, तथा क्रियापदक अन्तमे आँ। यथा, ऊ पठाए देलकाँ "ओ पठा देलनि"।

पश्चिमी विभाषा-ई वज्जिका नामसँ विदित भेल अछि। एकर मुख्य विशेषता थिक भोजपुरीक वा हिन्दीक प्रभावेँ अन्तिम लघु स्वरक लोप, जेना कहलन "कहलनि", छथ "छथि"।

विभाषाक विशद विवेचन सुभद्रा झा मे देखू।

§ 10. मैथिलीक अध्ययन-अनुसन्धान

मैथिलीक सांगोपांग अध्ययन-अनुसन्धान सभसँ पहिने सम्भवतः ग्रिअर्सन साहेब कयल। ताहिसँ पहिने वा पछाति किछु विदेशी विद्वान् मैथिलीक केवल आंशिक वा संक्षिप्त अध्ययन कयल। कोलब्रुक, होइर्नले, केलाग तथा सुनीति कुमार चटर्जी अन्यान्य भाषाक संग मैथिली विवेचन कयल। तकरा बाद अयलाह सुभद्र झा आ' रामावतार यादव जे मैथिलीक विवेचनकेँ बहुत आगाँ बढ़ओलनि।

पारम्परिक रीतिएँ मैथिलीक सांगोपांग अध्ययन कयल महावैयाकरण दीनबन्धु झा। हिनक अध्ययनसँ जे तथ्यसभ निरूपित आ' उद्घाटित भेल तकर पूरा-पूरा उपयोग सुभद्र झा, रामावतार यादव आ' गोविन्द झा कयल।

उपर्युक्त विद्वानलोकनिक एतद्विषयक कृतिसभक सूची परिशिष्ट 5 मे देल गेल अछि।

§ 10. क पड़ोसी भाषा समसँ तुलना

उत्तर भारतक एक छोरसँ दोसर छोर धरि पसरल नभा सभ मानू एके भाषाक विविध विभाषा थिक किएक तँ सभमे बहुतो उपादान समान अछि आ' ताहि प्रसादेँ बहुत अंश धरि परस्पर बोधगम्य अछि। एहि अद्भुत समानताक दू मुख्य कारण। पहिल, एक छोरसँ दोसर छोर धरि निर्बाध आबाजाही-कतहु कोनो राजनैतिक बेढ़-छेक नहि। दोसर, सभ भाषाकेँ संस्कृतक अक्षर भंडार सदा सुलभ (उर्दू टाकेँ छाड़ि)। तथापि सभ भाषामे व्याकरणक किछु एहन तत्त्वसभ अछि जे प्रत्येक भाषा आ' विभाषाकेँ किछु पृथक्त्व प्रदान करैत अछि। एहने तत्त्वसभकेँ ताकि-ताकि एतय ई देखयबाक अछि जे मैथिली अपन कोन-कोन पड़ोसी भाषासभसँ कतेक दूर वा समीप अछि।

मैथिली छओ भाषासँ परिवेष्टित अछि-मगही, भोजपुरी, ओड़िया, बंगला, असमिआ आ' नेपाली। एहिमे मैथिलीक सभसँ निकट अछि मगही आ' सभसँ दूर अछि नेपाली। बिचला चारू मध्य किछु पक्षमे एक निकट तँ किछु पक्षमे आन। एतय सूत्र रूपमे ई देखयबाक अछि जे कोन-कोन भाषाकेँ कोन-कोन तत्त्व मैथिलीसँ पृथक् करैत अछि।

(क) मगही-मैथिली

जहिआ हुआङ् चाङ पूर्व भारत अयलाह तहिआ धरि अर्थात् सातम शतक धरि मागधी वर्गक पाँचो भाषा एक छल (दे ODBL, पृ. 91)। आओर लगैत अछि जे 18म शतक धरि मगही आ' मैथिली एक छल। महीकेँ पृथक् भाषाक प्रतिष्ठा

संभवत: ग्रिअर्सन साहेबक देल थिक। जटिल क्रियापद रूपावली मगही आ मैथिलीकेँ मागधी वर्गक आन भाषासभसँ पृथक् करैत अछि आ' दूनूमे एकत्वक प्रबल आधार अछि। शुद्ध भाषिक दृष्टिएँ देखल जाय तँ मगही मैथिलीक एक विभाषा-सन लागत, परन्तु परम्परा, जनभावना आ' सामाजिकताक आधार पर मैथिलीसँ भिन्न रूपमे ठाढ़ अछि।

मगहीकेँ मैथिलीसँ फुटओनिहार सभसँ व्यापक अभिलक्षण अछि शब्दक अन्त्य स्वनक्षय। मैथिलीमे जेना प्राचीन परम्पराक प्रसादेँ अन्त्यस्वन टिकल अछि (विशेषत: मानक मैथिलीमे), तेना मगहीमे नहि रहल। शब्दान्तरेँ कहि सकैत छी जे मगही मैथिलीक अपूर्ण रूप (देखू 105) अथवा लोकमुखी/अमानक/वैभाषिक रूपसँ जतेक निकट अछि, ततेक निकट मानक रूपसँ नहि। साम्य कतबो रहओ, महीकेँ मैथिलीसँ पृथक् सिद्ध करबाक निम्नलिखित भाषिक आधार अछि।

(1) सहकारी क्रियापदमे छ् केर स्थानमे ह्-हम देखऽ ही "हम देखैत छी"; ऊ देखऽ हइ "ओ देखइत छइक"; हमर कहनाम ई हे "हमर कहब ई अछि", बाबूजी घरे नऽ हथ "बाबूजी घरमे नहि छथि"। एतहि इहो द्रष्टव्य जे देखइत मे इत लुप्त अछि, छइक मे क, नहि मे हि तथा छथि मे इ।

(2) संज्ञामे वचनभेद-एकवचन लड़िका, बहुवचन लड़िकन। एहिना लोग, लोगन; हम, हमनी।

(3) कारकचिह्न कर्म आ' सम्बन्धक दूनूक रूप'एक भ' गेल अछि-मोहन के बेटा के बुलाबऽ "मोहनक बेटाकेँ बुलाबह।"

(4) क्रियापदमे सकर्मक-अकर्मक भेद आ' लिंग-भेद नहि अछि-हमर भाय ऐलन आ' देखलन "हमर भाय अयलाह आ' देखलनि"; हमर भौजी भी ऐलन "हमर भौजी सेहो अइलीह"।

(5) वर्तमान कालमे इल प्रत्यय हम देखिल "हम दखैत छी"।

(6) उत्तम पुरुषमे ली-हम देखली "हम देखलहुँ"। ई मैथिलीक पश्चिमी विभाषामे चलैत अछि। एहीसँ मानक मैथिलीमे देखलिऔक (देखली + औक) इत्यादि रूप बनल अछि।

(7) क्रियावाचक संज्ञा ल सँ बनैत अछि (जेना भोजपुरीमे) देखल "देखब"।

(8) किछु शब्द एहनो अछि जे मैथिलीमे नहि भेटत-जेना अगरोटा, उगेन, ओरचल, चोथल, छकुनी, झाँसा, झलकी। ई सभ वर्णक्रमेँ विन्यस्त पचास शब्दसँ चुनल अछि। अर्थात् पचासमे चारि (8 प्रतिशत) शब्द मैथिलीसँ भिन्न लक्षित होइत अछि।

(ख) भोजपुरी-मैथिली

जानि नहि, कोन आधार पर ग्रिअर्सन साहेब भोजपुरीकेँ मैथिली आ' मगहीक संग साटि देलनि। एहिमे व्याकरणक दृष्टिएँ मैथिलीसँ जतेक साम्य अछि, तकिर कमसँ कम दस गुना बैषम्य देखि पड़ैत अछि।

निम्नलिखित उद्धरणमे तिर्यक् अक्षर वाला मैथिलीसँ नितान्त भिन्न अछि

(1) सतवंती -	ई के रहल हा ?	(1) ई के छल ?
(2) राजेश -	सूत्रधार रहन।	(2) सूत्रधार छलाह।
(3) सतवंती -	ई का करे आइल रहल बा ? का कहत रहल हा ?	(3) ई की करए' आयल छल ? की कहिल रहल छल ?
(4) राजेश -	कुछो ना।	(4) किछु नहि।
(5) सतवंती -	का दो ने बतियावत रहल हा। हम जानत बानी। तू कुछ छिपावत बाड़ू।	(5) किदन तँ बतिआइत छलय। हम जनैत छी। तोँ किछु छिपबै छह।
(6) राजेश -	हम खाये के नू मांगत बानी। बातमे काहे बझावत बाड़ू।	(6) हम खाए लेल मङैछी ने। बातमे किएक बझबैत छी ?

लगभग पचास शब्दक एहि उद्धरणमे केवल 12 शब्द मैथिलीसँ समान अछि। अर्थात् मोटा-मोटी पचीस प्रतिशत साम्य आ' पचहत्तरि प्रतिशत वैषम्य।

एही बिधिएँ मगहीसँ तुलना कय देखल जाय तँ उनटा परिणाम बहरायत: पचहत्तरि प्रतिशत साम्य, 25 प्रतिशत वैषम्य।

व्याकरणानुसार फुटाय-फुटाय देखी तँ क्रियापद-प्रणाली पूर्णत: भिन्न अछि। हँ, असमापिका क्रियामे किछु साम्य अछि। उदाहरण उपरका उद्धरणमे देखू।

कारकचिह्नमे सेहो पर्याप्त अन्तर अछि। यथा-

	कर्म	करण	सम्प्रदान	अपादान	सम्बन्ध	अधिकरण
भोजपुरी	के	से	लागि	से	के/का	मे
मैथिली	केँ	सँ	ले	सँ	क	मे

सात चिह्नमे केवल एक समान। भोजपुरीमे सम्बन्धकारक चिह्न विकारी थिक-हमार घर के लोगन, किन्तु हमार घर का लोगन से। मैथिलीमे सदा अविकारी।

क्रियावाचक संज्ञा (Infinitive) भोजपुरीमे ल सँ बनैत अछि।क, मैथि सँ-हिन्दी देखना, भोज, देखल, मै, देखब।

भविष्य क्रियापद भोजपुरीमे ह बाला अछि, मैथिली मे त बाला, यथा जइहें, मैथिली जाएत। किन्तु ब बाला दूनूमे समान अछि, भोज, जाइब, मै, जा

मैथिलीमे शब्दक अन्तमे लघु स्वर इ तथा उ खूब पाओल जाइत अछि, भो मे नहि- मैं, राति, भोज. रात; मैं देखि-देखिकेँ, भोज देख-देखके।

फलत: भोजपुरी मैथिलीस आ' मगहीसँ भिन्न प्रकृतिक एक स्वतंत्र भाषा छि

(ग) मैथिली-ओड़िआ

मैथिलीकेँ ओड़िआसँ बहुत साम्य रहितहुँ सम्पर्क बड़ थोड़। एकर क सम्भवत: लिपिभेद छल। एक लिपि रहबाक कारणेँ बंगलासँ सम्पर्क तँ अ रहलैक परन्तु साम्य ओतेक नहि छैक जतेक ओड़िआसँ।

उच्चारणमे केवल एक स्वन ळ ओड़िआमे मैथिलीसँ अधिक अछि। प्राचे स्वन छल, किन्तु आब नहि अछि। यथा, ओड़िआ कळलि, मै. कड़रि, सं कदली। र, ड़, ल तथा ळ एहि चारि स्वनक उच्चारणमे किछु व्यतिक्रम बहुत भा देखल जाइत अछि। एतबा छाड़ि मैथिली आ' ओड़िआक उच्चारणमे परम समा अछि। एकर विपरीत बंगलाक उच्चारण मैथिलीसँ बहुत भिन्न अछि। जेना सं लक्ष्मी, बंगला लोक्की, संस्कृत आत्मा, बंगला आत्ता, संस्कृत कृष्ण, बंगला क्रिष्ट हँ, ऋ केर उच्चारणमे मैथिली बंगलाक संग अछि, ओड़िआक नहि। यथा, सं प्रकृति, बंग आ' मै. प्रक्रिति, ओड़िआ प्रक्रुति। मैथिलीमे ण नहि अछि, कि ओड़िआमे कतहु-कतहु लेखमे ण पाओल जाइत अछि जेना, कम्बल आणि देल "कम्बल आनि देलनि।" सामान्य लोकक उच्चारणमे सम्भवत: न तथा ण केर नहि रहैत अछि।

सभसँ अधिक अन्तर अछि कारक चिह्न मे। यथा-

	कर्त्ता	कर्म	करण	सम्प्रदान	अपादान	सम्बन्ध	अधिकरण
ओड़िआ	०,ए	कु	रे	कु	रु, ठारु	र	रे
मैथिली	०	केँ	एँ	केँ	सँ	क	मे

सर्वनाममे उत्तम पुरुष एकवचन मुँ ओड़िआमे अछि, यथा मुँ जाउ अछि "ह (एक.) जाइत छी", आम्हे मान जाउ अछु "हमरा लोकनि जाइ छी।" मुँ केर प्रतिरू प्रामैमे मञे छल परन्तु आब लुप्त भ' गेल। से आ' जे केर स्थानमे सि आ' जि (ले यि) चलैत अछि। तोर, मोर, आम्हर मे विशेष्यसँ पूर्व र लुप्त होइत अछि, मो पु "मोर बेटा", तो लरा "तोहर नेना"।

बहुवचन कर्तामे ए लगैत अछि, परन्तु से केवल आदरसूचक होइत अछि, बहुत्व बुझयबाक होइत अछि तँ आगाँ मान शब्द जोड़ल जाइत अछि। यथा आदरमे-पण्डिते आउअछन्ति "पण्डितजी अबैत छथि।" बहुत्वमे-पण्डित माने आउ अछन्ति "पण्डित लोकनि अबैत छथि।"

मैथिलीमे विशेषणमे लिंग होइत अछि, जेना बुधिआर बालक, बुधिआरि बालिका। ओड़िआमे से नहि होइत अछि।

सत्तार्थक क्रियापद बहुत भाषामे छ, ह तथा थ व्यंजन बाला होइत अछि। जेना, मगही हइ, मै. अछि, हिन्दी था, नेपाली थियो, ओड़िया थिले। एहि सभ भाषामे थ बाला क्रियापद केवल भूत कालमे पाओल जाइत अछि, परन्तु मैथिलीमे वर्तमान कालहिमे पाओल जाइत अछि, जेना थिक, थिकाह इत्यादि। ई थिक धातु केवल मैथिलीमे अछि।

भविष्य कालक मूल प्रत्यय ब आ' भूत कालक ल सभ पूर्वांचलीय भाषामे चलैत अछि। परन्तु अन्यपुरुषमे त, जेना बेटा पढ़त, ई केवल मैथिली आ' मगहीमे अछि, आन कोनहु पूर्वांचलीयमे नहि अछि।

पुरुषसूचक प्रत्यय मैथिली आ' ओड़िया दूनूमे किछु भिन्न-भिन्न अछि। जेना, आज्ञामे-

ओड़िया-	तु आ	तुमे जाअ	आपण जाआन्तु
मैथिली-	तूँ आ	तोँ जाह	अपने जाथु

भूत आ' भविष्यमे-

ओड़िया-	तु गलु, जिबु	तुमे गल, जिब	आपण गले, जिबे
मैथिली-	तूँ गेलेँ, जएबेँ	तोँ गेलह, जएबह	अपने गेलहुँ, जाएब

(घ) मैथिली-बंगला

मैथिलीकेँ बंगलासँ पुरान सम्पर्क। तीनू पुबारि भाषाक बीच सभसँ अधिक निकटता सेहो एकरा बंगलहिसँ। (परन्तु उच्चारण में ओड़िआ सभसँ निकट अछि।) प्राचीन मैथिली आ' प्राचीन बंगला मानू एके भाषा छल। ब्रजबुली साहित्य दूनूक साझी सम्पत्ति मानल जाइत अछि। तथापि आजुक बंगला आ' आजुक मैथिलीक बीच बहुत अन्तर आबि गेल अछि।

सभसँ पैघ अन्तर अछि क्रियापदक रूपावलीमे। ई रूपावली बंगलामे सरलतम आ' संक्षिप्ततम अछि तँ मैथिलीमे जटिलतम आ' विस्तृततम। उदाहरणार्थ, बंगलामे

पुरुषभेदेँ छिल केर केवल छओ रूप होइत अछि- छिल, छिलाक, छिलि, छिलि छिले आ' छिलेन, परन्तु मैथिलीमे लगभग एकैस रूप (देखू 73।)

मैथिलीमे विशेषणमे आ' क्रियापदमे लिंगभेद अछि, जेना छोटकी बेटी गे छोटका बेटा गेल; किन्तु बंगलामे बड़ छेले गेल, बड़ बउ गेल।

बंगलाक उच्चारण मैथिलीक उच्चारणसँ बहुत भिन्न प्रकारक अछि। बंगलामे नहि अछि; कतहु ई एक प्रकारक ओ भ' जाइत अछि तँ कतहु आ', जेना ह (उच्चा. होलो), पटना (उच्चा. पाट्ना)। बंगलाक उच्चारणमे लघु-गुरुभेद नहि अछि, तेँ मात्रावृत्त नहि, केवल वर्णवृत्त चलैत अछि।

	कर्त्ता	कर्म	करण	अपादान	सम्बन्ध	अधिकरण
ओड़िआ	०,-ए	कु	-ए	हते	-एर	-ए
मैथिली	०	केँ	एँ, सँ	सँ	-क	मे

सम्प्रधारणा कारक (देखू 43,) बंगलामे नहि अछि; एहि स्थितिमे बंगलामे सम्बन्ध कारकक प्रयोग होइत अछि, जेना अङरेजी- Mohan has a book. मै. मोहनकेँ एकटा पोथी छनि, बंग. मोहनेर एक बइ आछे।

मागधी मूलक सभ भाषाक क्रियापदमे ब सँ भविष्य आ' ल सँ भूत द्योतित होइत अछि। परन्तु मैथिलीमे एकर योजक स्वर अ अछि तँ बंगलामे इ जेना मैथिली चलल, सुनब तँ बंगला चलिलो, सुनिबो।

(ङ) असमिआ-मैथिली

कहल जाइत अछि जे असमक आर्यलोकनि मध्य एक पैघ अंश उत्तर बिहार (मिथिला)सँ आबि बसनिहार लोकनिक अछि ग्रिअर्सन साहेब लिखैत छथि, 'आधुनिक असमिआ बिहारसँ उत्तरी बंगाल होइत आयल, सोझे बंगालसँ नहि।' एहिसँ सहजहि अनुमान क' सकैत छी जे असमिआक निर्माणमे मैथिलीक कतेक योगदान रहल होयत। एकर स्पष्टतम उदाहरण अछि असममे लिखल गेल अंकीआ नाट सभक भाषा। ई भाषा मैथिलीक ततेक निकट अछि जे अंकीआ नाट मैथिली पाठ्यक्रममे स्थान पवैत आबि रहल अछि।

परन्तु आजुक असमिआ मैथिलीसँ बहुत दूर चल गेल अछि। कारण, एकर विकासमे बहुतो आर्येतरमूलक जनगणक बहुत योगदान अछि। हिनका लोकनिक विभिन्न कुलक विभिन्न भाषासभसँ बहुत रास उपादान आबि-आबि असमिआकेँ नब आ' पृथक् रूप-रंग देलक अछि। तहिना बंगलाक प्रभाव सेहो स्पष्ट अछि।

पहिने उच्चारण देखल जाय। एहूमे अ स्वरक वर्तुलीकरण होइत अछि, किन्तु बंगलासँ किछु कम। मैथिली आ' मगहीमे उपान्त्य स्थानमे अल्पमात्र वर्तुलीकरण देखल जाइत अछि; ताहिसँ पश्चिम एहि प्रवृत्तिक सर्वथा अभाव अछि। असमिआमे स तद्भव शब्दमे ह भ' गेल अछि, जेना मानुह, हाँहि, बहिब (क्रमशः मै. मानुस, हँसी, बैसब)। ज केर उच्चारण ज होइत अछि। बहुत शब्दमे स केर स्थानमे छ लिखल जाइत अछि, जेना एम्बेछेदर (ambassador), बछ (bus)। एकर उच्चारण ने शुद्ध छ-सन होइत अछि, ने शुद्ध स-सन। मैथिली आ' बंगलामे व नहि अछि, किन्तु असमिआमे, विशेषतः अन्तस्थश्रुति (glide) केर रूपमे, खूब अछि, जेना मैथिली हाबा, अस. हावा। असमिआमे त्रिभुजक नीचाँ दक्षिण तिर्यक् रेखा रहैछ। तिरहुतामे तिर्यक् अधोरेखाक बदला माथ पर अर्धचन्द्र देल जाइत अछि। ड़ केर स्थानमे बहुत ठाम र लिखल जाइत अछि, जेना मै. भाड़ा, अस. भारा; मै. पहाड़, अस. पाहार। स्वराघात सामान्यतः पहिल वर्णपर पड़ैत अछि, बंगला जकाँ; तहिँ पहाड़ पाहार भ' गेल।

व्याकरणमे असमिआक सभसँ पैघ विशेषता थिक कर्तामे, प्रायः सकर्मक भूत कालमे, कारक चिह्न ए/इ लगायब-ओहिना जेना हिन्दीमे ने। यथा, रजाइ कोनो गराकी राणी के भालो नापाइछिल "राजा कोनहुटा रानीसँ प्रेम नहि करैत छलाह।" संन्यासीये सरु राणी कऽ एटा फल दि कले जे "संन्यासी छोटकी रानीकेँ एकटा फल द' कहलकनि जे।" ई विशेषता किछु-किछु मैथिलीक पूर्वी विभाषा अंगिकामे पाओल जाइत अछि। आन कोनहु पूर्वांचलीय भाषामे नहि। आनो कारकचिह्न अस. मे मैथिलीसँ आन रूपक अछि :

	कर्म	करण	सम्प्रदान	सम्बन्ध	अधिकरण	अपादान
असमिआ	लै,	कऽ	ए,रे	र	त	रपरा
मैथिली	केँ	एँ,सँ	केँ	क	मे	सँ

सर्वनाममे उत्तम पुरुष एकवचन मइ चलैत अछि। (जेना हिन्दी मैं, प्रामै मञे) आ' बहुवचनमे आमि, किन्तु मैथिलीमे एकवचन लुप्त भ' भेल। जे से केर स्थानमे जि सि चलैत अछि।

वाक्य-रचनामे न क्रियापदमे सटैत अछि, जेना एरिब के नोवारे "छोड़ि नहि सकैत अछि।" चकुतनपरिल "नजरिपर नहि पड़लैक।"

बहुत रास शब्दे नहि, रचनांग सेहो भिन्न-भन्न जनगणक भाषासँ आयल अछि, जे असमिआसँ भिन्न भाषामे कदाचिते भेटत, जेना हाबि "वन", डाङरिया "पैघ, बड़का" सरु "छोट", बेलि "सूर्य", छोवालो "छौड़ी" इत्यादि।

§ 10 ख. अन्यान्य भाषासभसँ तुलना

मैथिलीमे पड़ोसी भाषासभसँ जे साम्य अछि से निकटताक कारणेँ। भाषा जतेक दूरक ततेक असमानता भेटत। ई बात निम्नलिखित उद्धरणसँ लक्षित होयत :

मैथिली	-	अहाँक नाम की थिक/अछि ?
सिन्धी	-	तव्हाँ जो नालो छा आहे ?
कश्मीरी	-	त्वहि क्याह् छु नाव ?
मराठी	-	आपले नांव काय ?
गुजराती	-	आप नुं नाम शुं छे ?
मैथिली	-	गाड़ी कोन प्लेटफार्म पर आओत ?
सिन्धी	-	गादी कडिडे प्लेटफार्म ते ईदी ?
कश्मीरी	-	गाड्य कथ् प्लेटफार्म पेट यियि ?
मराठी	-	गाड़ी कुठच्या प्लेटफार्म वर येईल ?
गुजराती	-	गाड़ी कया प्लेट फार्म पर आवशे ?

आरम्भ हिन्दीसँ कयल जाय कारण जे व्याकरणक दृष्टिएँ जाहि-जाहि बिन्दु पर मैथिलीमे असमानता छैक, आनहु बहुत भाषामे ताही तरहक असमानता अधिक अछि।

(क) हिन्दी-मैथिली

मैथिलीमे हिन्दीसँ निम्नलिखित वैषम्य प्रमुख अछि :

(1) मैथिलीमे कतहु-कतहु अ' केर उचचारण ठोर गोल कए ओ-सन होइत अछि, किन्तु हिन्दीमे नहि।

(2) मै. मे शब्दक अन्तमे इ तथा उ टिकल अछि, किन्तु हिन्दीमे लुप्त वा दीर्घ भ' गेल अछि। यथा हिन्दी देख लिया, मै. देखि लेलहुँ; मै. पानि, हिन्दी पानी।

(3) मै. मे ऐ तथा औ केर उच्चारण अइ/अउ सन होइत अछि, परन्तु हिन्दीमे उर्दूक कैद आ' फौज क स्वर सन।

(4) हिन्दीमे ल केर आधिक्य अछि तँ मै. मे र केर, जेना हिन्दी हल, फाल, फल; मै. हर, फार, फर।

(5) हिन्दीमे शब्दगत (कल्पित) आ' वस्तुगत (यथार्थ) दूनू प्रकारक लिंग अछि, किन्तु मै. मे केवल वस्तुगत। जेना हिन्दी छाता मिला, छड़ी मिली; मै. छाता, छड़ी भेटल।

(6) हिन्दीमे वचन अछि, मैथिलीमे नहि। जेना हिन्दी एक कन्या पढ़ती है, दो कन्याएँ पढ़ती हैं; मै. एक कन्या पढ़ैत अछि, दू कन्या पढ़ैत अछि।

(7) मै. मे क्रियापद जटिल आ विस्तृत अछि किन्तु हिन्दीमे सरल आ' सीमित। हिन्दीक एक क्रियापद है केर अनुवाद मैथिलीमे प्रसंगानुसार एकैस रूपमे होएत-अछि, छैक, छैन्ह, छहु, छथुन्ह इत्यादि।

(8) हिन्दीमे कर्मवाच्यमे कर्तामे ने लगैत अछि आ' क्रियापदक लिंग कर्मक अनुसार होइत अछि, जेना मैंने चिट्ठी पढ़ी। मैथिलीमे तेना नहि होइत अछि-हम चिट्ठी पढ़लहुँ।

(9) हिन्दीमे सम्बन्ध कारक आ' आकारान्त विशेषण विकारी होइत अछि, किन्तु मैथिलीमे नहि। यथा, हिन्दी मोहन का लड़का, मोहन की लड़की, मोहन के घर में; आधा किस्सा, आधी कहानी, आधे रास्ते में; मैथिली मोहनक बेटा, मोहनक बेटी, मोहनक घरमे, आधा खीसा, आधा सम्पति, आधा बाटमे।

(10) क्रियापदक बहुतो हिन्दीसँ भिन्न अछि। यथा

मैथिली-	कहल	कहब	कहत	कहय	कहओ
हिन्दी-	कहा	कहेगा	कहेग	कहे	?

(ख) नेपाली-मैथिली

पड़ोसी भाषा होइतहुँ नेपालीमे मैथिलीसँ कोनो उल्लेखनीय साम्य नहि भेटैत अछि। मैथिली जकाँ इहो छ-वर्गक भाषा थिक, तेँ हुन्छ, हुन्छन्, गर्छ, हुने इत्यादि ध्वनि मैथिली सन लगैत अछि। मैथिलीमे नेपालीसँ किछु शब्द आयल अछि जे नेपाल तराइमे प्रचलित अछि।

(ग) गुजराती-मैथिली

मैथिली जकाँ गुजरातीमे सेहो ए, ओ, ऐ तथा और स्वरक दुर्बल स्थानमे लघु उच्चारण होइत अछि। दोसर समानता अछि स्वराघातमे। एहूमे स्वराघातवश उपान्त्यपूर्वलघुता नियम (19.) अछि, जेना संस्कृत आकाश, गुज. मै. अकास; संस्कृत आवास गुज. -मै. अबास। मैथिलिए जेकाँ एहूमे ल केर स्थानमे ळ (=मै. र) चलैत अछि, जेना संस्कृत अङ्गुल, मै. आङुर, गुज. आँगळी, मै. फर, गुज. फळ। क्रियावाचक संज्ञा गुजरातीमे अव सँ बनैत अछि तँ मै. मे अब सँ। सहकारी (सत्तार्थक) क्रियापद एहूमे छ बाला अछि- छु, छे, छो (तुल. नेपाली)। तारो नम्बर शुं छे? "तोहर नम्बर की छहु?" तमारुँ बिल शुँ थयू? "तोहर बिल की (कतेक) भेलहु"?

(घ) सिन्धी-मैथिली

मैथिलिए जकाँ सिन्धीमे सेहो लघुतर स्वर, विशेषत: शब्दक अन्तमे उ तथा इ अछि (किन्तु सिन्धीमे ई सभ बन्द स्वर (Implosive) कहल जा सकैत अछि)। मैथिलीसँ सभसँ महत्वपूर्ण साम्य अछि आदरसूचक मध्यम पुरुषमे, जेना मै. अहाँ, सिन्धी अन्हाँ, अहाँ, अहीँ, आँईँ ....।

(ङ) काश्मीरी-मैथिली

काश्मीरिअहुमे मैथिलीजकाँ स्वर तीन प्रकारक अछि गुरु, लघु आ' लघुतर। एहुमे य ए भ' गेल अछि आ व ओ। सभसँ महत्वपूर्ण साम्य ई अछि जे एहूमे क्रियापदक अन्विति कर्ताक संग तथा तद्भिन्न कारकहुक संग होइत अछि। पारिभाषिक शब्दमे दूनू pronominalised भाषा थिक। परन्तु अन्वितिक जतेक विस्तार आ' नियमितता मैथिलीमे अछि ततेक काश्मीरीमे नहि।

(च) मराठी-मैथिली

मराठी बहिरंग समूहमे पड़ैत अछि जकर मुख्य लक्षण थिक छ बाला सहकारी क्रियापद। मैथिलीसँ एतबा साम्य स्पष्ट अछि। कारक चिह्न आ' क्रियापदरूपावली सभटा भिन्न छैक। दोसर साम्य छैक ल केर स्थानमे मूर्धन्य ळ = मैथिली र। रहिमे तीन लिंग अछि तथा प्रत्यय जुटलापर स्वनविकार बहुत होइत अछि। एहिमे संश्लेषावस्था झलकैत अछि। तहि बीम्स साहेब कहै छथि- 'हिन्दीकेँ भारतीय अङरेजी कहि सकैत छी तँ मराठीकेँ भारतीय जर्मन।'

§ 11. मैथिलीक उद्भव

भाषा गिरगिटे-जकाँ रंग बदलैत रहैत अछि। भेद एतबे जे गिरगिटक नाम नहि बदलैत छैक, परन्तु भाषाक बदलि जाइत छैक। भाषाक रंग बदलब परिवर्तन कहबैत अछि। परिवर्तन अध्ययन जाहि बिन्दुसँ आरम्भ कयल जाइत अछि से मूल कहबैत अछि आ' परिवर्तन प्रवाह विकास कहबैत अछि। कोनो भाषाक मूलसँ उक्त प्रवाहक अवसान-बिन्दु धरि परिवर्त्तन-यात्राक वर्णन अङरेजीमे origin and development कहबैत अछि जकर अनुवाद थिक उद्भव ओ विकास।

(1) आर्यभाषाक योगदान

मैथिलीक उद्भव ओ विकासक अध्ययन हेतु एकर जड़ि भाँजिअबैत छी तँ से मूभा धरि भेटैत अछि। एहिमे आजुक मैथिलीक बहुत रास उपादान (स्वन, नाम, धातु, प्रत्यय आदि) तत्सम वा तद्भव रूपमे भेटैत अछि। एहिसँ आगाँ एखन धनिर मानवक आँखि नहि पहुँचलैक अछि। वस्तुतः मूभाकेँ मैथिलीक विकासक आरम्भ-बिन्दु मानब समीचीन नहि होयत, किएक तँ ई केवल अनुमानसँ गढ़ल भाषा थिक। अतः मैथिलीक मूलान्वेषणमे अधिकसँ अधिक भारोपीय कुले धरि जायब उचित होयत। व्यावहारिक दृष्टिएँ मैथिलीक मूलान्वेषण प्राभा तथा अन्यान्य भारतीय भाषे धरि सीमित राखय पड़त। एहिसँ अन्य कुल आ' शाखा सभक लागि आगाँ देखाओल जायत।

भाषाक चर्चा होइतहि आर्यजनक मूल निवास आ' परिव्रजनक चर्चा टपकि पड़ैत अछि। अत: ई कहि देब आवश्यक जे मैथिलीक उद्भव ओ विकासक अध्ययनमे ई मानिकेँ चलय पड़त जे मैथिलीकेँ केवल भारतीय आ' ईरानी आर्यलोकनिक भाषासँ सरोकार छैक। आर्यजन कतयसँ कहिआ अयलाह से भाषाशास्त्रक नहि, इतिहासक विषय थिक।

(2) आन भाषाक योगदान

प्राभाकेँ मैथिलीक विकासक आरम्भ-बिन्दु कहल, तकर अर्थ ई नहि जे एकर विकासमे आन भाषाक योगदान नहि छैक। वस्तुत: मैथिलीक विकास-क्रममे अन्यान्य कुलक बहुतो जीवित आ' मृत भाषाक उपादान समायल अछि।

वैदिक आर्यलोकनि जे भाषा बजैत छल होयताह तकर देश, काल आ पात्र (वक्तृ-समाज) भेदेँ अनेक प्रभेद रहल होयत। छान्दस (अर्थात् वेदक ऋचा सभक) भाषा ओहि भाषाक एक शिष्ट (क्लासिकल) प्रभेद थिक। ताहिसँ भिन्न मौखिक प्रभेद रहल होयत। सुतराम् मैथिलीक विकासमे एहू मुखभाषाक योग रहल होयत। एक-दू उदाहरण देखल जाय। नवीन मैथिली आज < छान्दस अद्य ; परन्तु प्राचीन मैथिली आजु < वैदिक मुखभाषा अद्यु। प्राचीन मैथिली देखइ/देखए < वैदिक मुखभाषा दक्षति। ज्ञातव्य जे प्राभामे दृश-धातुक प्रयोग वर्तमानकालमे नहि होइत अछि; एकरा स्थानमे पश-धातु चलैत अछि पश्यति।

पुराविद्लोकनि कहैत छथि जे भारतमे आर्यजनक अतिरिक्त अनेक जाति-प्रजातिक लोक सुदूर अतीतमे अबैत-जाइत रहल। एतय एक समय प्राय: नीग्रिटो प्रजातिक लोक बसैत छल जे सम्प्रति अंडमान आदि द्वीपमे पाओल जाइत अछि आ' पापुअन कुलक भाषा बजैत अछि। तदुत्तर प्रोटो-ऑस्ट्रोलॉयड प्रजातिक लोक आयल जे ऑस्ट्रिक कुलक भाषा बजैत छल। कतोक विद्वान् मानैत छथि जे वर्तमान मैथिल समाजमे जे चारिम वर्णक लोक अछि से मूलत: एही प्रजातिक थिक। दक्षिणमे द्रविळ कुलक परम प्रभावशाली भाषा अछि। उत्तर दिस किरात आ पूब दिस कोल प्रजातिक लोक बसैत छल। उपर्युक्त सभ प्रजातिक लोक अंशत: देशान्तर चल गेल आ' अंशत: स्थानीय आर्य-समाजमे लीन होइत गेल, अपन भाषा बिसरैत गेल आ' आर्यभाषा बाजय लागल। ओकरा सभक भाषा स्वयं तँ लुप्त भ' गेल परन्तु आर्यभाषाकेँ बहुत किछु दैत गेल। द्रविड़जन आर्यजनक तुल्ये पराक्रमी छल, तेँ ओकरा सभक भाषा लुप्त नहि भेल, प्रत्युत संस्कृतक शब्द विशाल मात्रामे ग्रहण क' आओर समृद्ध होइत गेल, आ'

आर्यभाषाकेँ किछु अंशमे प्रभावित करैत गेल। विभिन्न भाषाक बीच आदान-प्रदान मुख्यत: शब्दावलीक होइत अछि। एकर सोदाहरण विवेचन आगाँ शब्दावली प्रकरणमे कयल जायत, परन्तु आधुनिक मैथिलीमे एहन बहुत प्रत्यय, वाक्यविन्यास, अन्वयनियम आदि उपादान अछि जकर मूल ने प्राभामे भेटैत अछि, ने मभामे। जेना प्रत्यय गर सँ नोनगर, तेलगर, नाहर सँ देखनाहर, निहार सँ देखनिहार ल सँ सुनल।

वाक्यांश-योजना देखि रहल छथि, बाजि उठलाह इत्यादिक शब्दश: अनुवाद ने संस्कृतमे कयल जा सकैत अछि ने प्राकृतमे। एहिना क्रियापदमे फलभागीक अन्वय इत्यादि बहुत रास तत्त्व नमै मे एहन भेटैत अछि जकर मूल आर्यभाषामे नहि भेटल।

तखन कोन-कोन भाषा-विशेषसँ मैथिलीमे आल ई उपादान सभ ? कोनो लुप्त भाषासँ से कहब तँ मोटा पटकब होत। कहल जाइत अछि जे आर्येतर जनगण मध्य किछु तँ अपन भाषा गमा (चारिम वर्णक रूपमे) वैदिक आर्यजनमे लीन भ' गेल आओर किछु सुदूर कात-करोटमे बनवासी/ गिरिवासी भ' आइ धरि अपन-अपन भाषा (ओ संस्कृति) केँ जोगओन अछि। एहि जनगण सभक भाषाक वर्गीकरण austric family ऑस्ट्रिक कुलक रूपमे कयल गेल अछि। एकर दू उपकुल अछि : मुंडा आ' मोन-ख्मेर। मुंडाक एक समुदाय सओँतार वा सन्थाल एखनहु मिथिलाक पूर्वांचल पुरैनिआँ, भागलपुर आ' संथाल परगनामे बसैत अछि। ओ अपन भाषा सओँतारी वा सन्थालीकेँ जोगओने अछि। आस्ट्रिक कुलक दोसर शाखामे दू जनगण अछि : मोन आ'-ख्मेर। दूनूक भाषा लगभग एक अछि, तेँ ई मोन ख्मेर कहबैत अछि। ई दूनू जनगण सुदूर अतीतमे भारतक पूर्वांचलमे बसैत छल। मैथिलीक उद्‌भवमे एहि दूनू भाषाक योगदान छल होयत।

एहिना कोल अर्थात् चीन-तिब्बतीय प्रजातिक किछु जनगण सुदूर अतीतमे मिथिलाक उत्तर भाग ओ पूर्वोत्तर दिशामे बसैत छल। सम्प्रति ईसभ नेपालसँ असम धरि पर्वतीय प्रदेशमे पसरल अछि। एहि प्रजातिक भाषा सभक गणना चीन-तिब्बतीय कुलक हिमालय तटीय शाखामे कयल जाइत अछि। आजुक मैथिलीक रूपायनमे एहू शाखाक योगदान रहल होयत।

परन्तु खेद जे उपर्युक्त भाषा सभसँ मैथिलीक तुलनात्मक अध्ययन एखन धरि नहि भ' सकल अछि, तेँ छिट-फुट उदाहरणहिसँ सन्तोष करबाक होयत।

(3) तद्‌भवक उद्‌भव

मैथिलीक उद्‌भवमे उपर्युक्त भाषा सभक प्रत्यक्ष योगदान मूल्यवान् होइतहुँ मात्रामे थोड़ अछि। परन्तु प्राभासँ जे मजाक उद्‌भव भेल ताहिमे आर्येतर समाजक योगदान

बड़ व्यापक अछि, कारण मभामे जे एकहि बेर महान् स्वन-परिवर्त्तन आयल से एही जनगणक आनल थिक। प्राभामे किछु एहन संयुक्त आ' एकल स्वन सभ अछि जकर यथावत् उच्चारण उक्त जनगण नहि क' सकैत छल, किएक तँ ओकर मातृभाषामे ओ ध्वनि सभ नहि छल। एहना स्थितिमे ओ सभ जखन प्राभा सिखलक तँ ओकर ध्वनितन्त्र अपन ध्वनितन्त्रक अनुरूप अर्थात् अपन अभ्यस्त जिह्वाक अनुकूल बना-बना क' बाजय लागल, जेना शिशु भाषा सिखबाक क्रममे बजैत अछि। उदाहरण देखल जाय :

(क) देवानां प्रियः प्रियदर्शी राजा एवम् आह।

(ख) देवानं पिय पियदसि लजा एवं अहा॥

एहिमे (क) शिष्ट (आर्य) जनक उच्चारण थिक आ' (ख) प्राकृत जनक। ई प्राकृत (अशिक्षित, आर्येतर) जनगण आर्यावर्तक विभिन्न क्षेत्रमे विभिन्न भाषा बजैत छल तेँ प्राकृत भाषा क्षेत्रभेदेँ एकसँ अनेक भ' गेल। प्राकृतजनक प्रभाव (अर्थात् ओकरा मुहेँ बहरायल आर्यभाषाक आदर) उत्तरोत्तर बढ़ैत गेल। संस्कृतसँ प्राकृत भेल, ताहिसँ अपभ्रंश आ' ताहिसँ विभिन्न नभा।

स्वन-परिवर्तनक ई प्रक्रिया भारतक एक शीर्षस्थ भाषातत्त्वविद् भर्तृहरि वाक्यपदीयमे सूत्ररूपेँ सूचित कयने छथि :

देवी वाग, व्ययकीर्णेयम् अशक्तैर्-अभिधातृभि :

अर्थात् देववाणी अशक्त (यथावत् उच्चारण करबामे असमर्थ) वक्तालोकक मुहेँ व्यवकीर्ण भ' गेल (बिगाड़ि देल गेल)।

(4) तत्समक पुनर्जीवन

मभा आ' नभाक उद्भवमे उपर्युक्त आर्येतरक भूमिका भनहि महत्वपूर्ण हो, परन्तु मुख्य आ व्यापक भूमिका आन्तरिके रहल अछि। प्राचीन कालहिसँ भारतीय मनीषा वा प्रबुद्ध ब्राह्मणवर्ग कहू, देववाणीक स्वरूपमे कोनहु परिवर्तनकेँ विकृति आ' तस्मात् वर्जनीय बुझैत रहलाह। अतः तद्भव रूपक प्रतिष्ठा घटय लागल आ' शिष्टवर्गक भाषा पुनः तत्समोन्मुख भ' गेल। ततबे नहि, नवागत तत्सम शब्द जनसाधारणक मुहमे पड़ि जे तद्भव होइत जाइत छल से ठमकि गेल। खास क' प्राकृतमे जे मध्यवर्ती व्यंजनक लोप आ' कोमलीकरा (जेना वचन सँ बअन/बयन ; काक सँ काअ) होइत छल से रुकि गेल। शब्दान्तरेँ कहि सकैत छी जे वक्ताक उक्त अशक्ति घटैत गेलैक,

किएक तँ ओकर मातृभाषाक स्थान क्रमशः आर्यभाषा लैत गेलैक आ' ओ आर्यभाषाक ध्वनितन्त्र ओकरा आत्मसात् होइत गेलैक। एहि तरहेँ प्राभाक ध्वनिपरिवर्तनक आरेख जे मभामे नीचाँ दिस रहल से नभामे पुनः उपर दिस भ' गेल। आन कोनो देशक भाषामे एहि प्रकारक प्रवृत्ति कदाचिते भेटत।

एहि ऊर्ध्वमुखी प्रवृत्तिक एक बहुत पैघ सुफल ई भेल अछि जे प्राचीन भाषा आ' साहित्य आइ धरि आर्यावर्त्तमे बहुत अंश धरि बोधगम्य रहल। आइओ ऋग्वेदक बहुत रास शब्द बोधगम्ये नहि अछि, दैनन्दिन व्यवहारमे प्रयुक्त होइत अछि। यथा ऋग्वेदक पहिल ऋचा देखल जाय :

अग्निम्-ईडे पुरोहितं यज्ञस्य देवम्-ऋत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्।

"अग्निकेँ प्रणाम करैत छी जे पुरोहित, यज्ञक देवस्वरूप ऋत्विक, होता आओर बहुत रत्न देनिहार थिकाह।"

एहिमे आठमे पाँच शब्द अग्नि, पुरोहित, यज्ञ, देव आओर रत्न ओही अर्थ आ' ओही रूपमे आइ लगभग तीन हजार वर्ष बादो सर्वविदित अछि। एकर विपरीत लगभग एक हजार वर्ष पूर्व 971 ई. क निम्नलिखित अङरेजी अनुच्छेक 15 शब्दमे केवल दू we तथा Godes चिन्हार-सन लगैत अछि :

Uton we nu efstan eaille mzgene godra weorca, ond geornfulle becon

godes miltsa, nu we ongeotan magon pat

भारतीय आर्यभाषाहुमे जँ ध्वनिपरिवर्तनक आरेख अधोमुखसँ ऊर्ध्वमुख नहि होइत तँ प्राचीन भाषा एतहु प्राचीन अङरेजिए-जकाँ दुर्बोध भ' गेल रहैत।

आरेखक एही ऊर्ध्वमुखी प्रवृत्तिक फलस्वरूप बङला, असमिआ, ओड़िआ आ' मैथिली ई चारू भाषा मानू तत्समशब्दमय भ' गेल। एहि प्रसंग विशेष विवेचन आगाँ देखल जाय।

■